प्रेस विज्ञप्ति

भारत में पूरे विश्व का मार्गदर्शन करने की क्षमता... डॉ. रमन सिंह

रायपुर, 14 मार्च: मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने कहा कि भारत अपने ज्ञान और संस्कारों के बल पर पूरी दुनिया का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है। ग्लोबल विजन को लेकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना हमारी हजारों साल पुरानी परम्परा है। यह भावना हमारे डी.एन.ए. में है। यही एकमात्र रास्ता है विश्व शान्ति का। हम सुधर जाएँ तो हमारे संस्कारों में परिवर्तन आने से पूरा विश्व बदल सकता है।

डॉ. रमन सिंह आज प्रजापिता ब्रह्माकमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा शान्ति सरोवर में आयोजित दिव्य उद्‌बोधन समारोह में बोल रहे थे। विषय था- संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा कि इस समय दुनिया में तनाव बढ़ रहा है। इतिहास गवाह है कि जब-जब तनाव बढ़ता है, तब-तब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी जैसे संगठन सामने आए हैं। वह पिछले बीस-पच्चीस वर्षों से इस संस्थान के सम्पर्क में हैं और इस संस्थान के विचारों से काफी प्रभावित हैं। यह संगठन किसी मनुष्य द्वारा नहीं अपितु स्वयं परमात्मा द्वारा स्थापित संस्थान है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संस्थान की बहनें पूरे विश्व में घूम-घूम कर शान्ति का सन्देश फैला रही हैं। वर्तमान समय विश्व के 140 देशों में इसकी नौ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्र कार्यरत हैं। जहाँ पर लाखों लोग इस संस्थान से जुड़कर शान्ति और सद्‌भावना के लिए काम कर रहे हैं। हमारे राज्य में बस्तर से लेकर बलरामपुर तक यह संस्थान कार्य कर रही है।

उन्होंने कल दिल्ली में श्री श्री रविशंकर द्वारा यमुना के किनारे आयोजित विश्व सांस्कृतिक महोत्सव को याद करते हुए कहा कि वहाँ पर दुनिया भर से लोग आए थे जिसके कारण दिल्ली पूरे विश्व की संस्कृतिक राजधानी लग रही थी। ब्रह्माकुमारी संस्थान का यह आयोजन भी उसी का एक हिस्सा लग रहा है।

यूरोप स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्रह्माकुमारी सुदेश दीदी ने अपने प्रेरणादायक उद्‌बोधन में कहा कि हम सभी मिलकर अपने संस्कारों में दिव्यता लाने का योगदान करें तो संसार को बदल सकते हैं। उन्होंने आव्हान किया कि हम सब अपने मन को मन्दिर बनाएं, आत्मा का दीपक जगाएं और घर को आश्रम बनाएं तो यह संसार पुन: स्वर्ग बन जाएगा। उन्होंने कहा कि परमपिता परमात्मा के संग योग लगाने से हमारे संस्कारों में दिव्यता और पवित्रता आने लगती है।

सुदेश दीदी ने बतलाया कि संस्कार का आधार मन का संकल्प होता है। मन में जो विचार आते हैं उस पर बुद्धि निर्णय लेती है। निर्णय के बाद वह हमारे कर्म में आता है। बार-बार दुहराए जाने पर यही कर्म हमारी आदत या संस्कार में बदल जाता है। अब यह संस्कार बनता कैसे है? सबसे पहले हमारे संस्कारों पर माता-पिता का प्रभाव पड़ता है। माँ-बाप को देखकर बच्चा उनसे सीखता है। फिर शिक्षा यानि पढ़ाई से हमको संस्कार मिलते हैं। इसलिए माता-पिता बच्चों को अच्छे स्कूलों में प्रवेश दिलाते हैं। उसके पश्चात दोस्तों के संग से भी हमारे संस्कार प्रभावित होते हैं। उन्होंने संस्कार को कर्म का फल

(शेष अगले पृष्ठ २ पर...)

बतलाते हुए कहा कि मन, बुद्धि और संस्कार आत्मा की शक्तियाँ हैं। शरीर छोड़ने के बाद आत्मा अपने संस्कार साथ में लेकर जाती है। इन्हीं संस्कारों के अनुसार आत्मा का पुर्नजन्म होता है।

समारोह को सम्बोधित करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने कहा कि कर्मों के आधार पर हमारे संस्कार बनते हैं। इसलिए संस्कारों में श्रेष्ठता लाने के लिए कर्मों में श्रेष्ठता लानी होगी। अच्छे कर्म करने के लिए अच्छे कर्मों का ज्ञान होना जरूरी है। इसीलिए कर्मों को अच्छा बनाने की शिक्षा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा पिछले 80 वर्षों से दिया जा रहा है।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया। उन्होंने प्रदेश शासन की ओर से ब्रह्माकुमारी सुदेश दीदी का शॉल और श्रीफल भेंटकर अभिनन्दन भी किया। दुर्ग से आए गायक ब्रह्माकुमार युगरत्न ने स्वागत गीत गाकर भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी रश्मि बहन ने किया। इस अवसर पर बहुत बड़ी संख्या में राजधानी के प्रबुद्ध नागरिक उपस्थित थे।

प्रेषकः मीडिया प्रभाग,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
शान्ति सरोवर, विधानसभा रोड, रायपुर
फोनः 2104218, 2253253